# मैथिलीशरण गुप्त

हिन्दी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के कवियों में मैथिलीशरण गुप्तजी का स्थान सर्वोपरि है। देश और संस्कृति के प्रति प्रेम के अलावा गुप्तजी के काव्य में उपेक्षित-दलितों के प्रति सहानुभूति, गांधीवाद की ओर झुकाव और मानवतावादी दृष्टि मिलती है। आपके काव्य में सरलता एवं सरसता का सुखद समन्वय हुआ है। इसलिए हिन्दी के आधुनिक कालीन कवियों में गुप्तजी कदाचित् सबसे लोकप्रिय कवि रहे हैं।

राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्ध गुप्तजी का जन्म 1886 ई. में चिरगाँव, जिला झाँसी में हुआ था। आपके पिता सेठ रामचरणजी रामभक्त एवं सुकवि थे। आगे पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्रोत्साहन पाकर आपकी काव्य-सरस्वती प्रवाहित होती गयी। 1964 ई. में आपका स्वर्गवास हुआ।

1912 ई. में प्रकाशित काव्य-ग्रंथ '**भारत-भारती**' ने गुप्तजी को राष्ट्रकवि के रूप में स्थापित किया। कालांतर में आपने '**पंचवटी**', '**किसान**', '**साकेत**', '**यशोधरा**', '**द्वापर**', '**जयभारत**', '**विष्णुप्रिया**' आदि काव्य-ग्रंथों की रचना की। आपके द्वारा विरचित '**साकेत**' एक महाकाव्य है। आपका '**किसान**' खंडकाव्य भारतीय कृषक-जीवन की करुण गाथा है। आपकी काव्य-भाषा खड़ीबोली हैं - जिस पर आपको असाधारण अधिकार प्राप्त था।

≈ ***नर हो, न निराश करो मन को*** *कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त ने मनुष्य को कर्मठता का संदेश दिया है। कवि कहता है कि मनुष्य को अनुकूल अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने महत्व एवं व्यक्तित्व को पहचाने, तभी उसे आत्म-गौरव और अमरत्व प्राप्त हो सकता है। निराश होकर बैठना मनुष्य के लिए लज्जाजनक है।*

# नर हो, न निराश करो मन को

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहके निज नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो!
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराशा करो मन को ॥

सँभलो कि सु-योग न जाए चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला?
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना।
अखिलेश्वर है अवलंबन को,
नर हो, न निराश करो मन को॥

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ,
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ?
तुम स्वत्त्व-सुधा-रस पान करो,
उठके अमरत्व-विधान करो।
दव-रूप रहो भव-कानन को,
नर हो, न निराश करो मन को॥

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
'हम भी कुछ हैं' – यह ध्यान रहे।
सब जाय अभी, पर मान रहे,
मरणोत्तर गुंजित गान रहे।
कुछ हो, न तजो निज साधन को,
नर हो, न निराश करो मन को॥

## अभ्यासमाला

### बोध एवं विचार

**(अ) सही विकल्प का चयन करो :**

1 कवि ने हमें प्रेरणा दी है –
(क) कर्म की (ख) आशा की
(ग) गौरव की (घ) साधन की

2. कवि के अनुसार मनुष्य को अमरत्व प्राप्त हो सकता है –
(क) अपने नाम से (ख) धन से
(ग) भाग्य से (घ) अपने व्यक्तित्व से

3. कवि के अनुसार 'न निराश करो मन को' का आशय है –
(क) सफलता प्राप्त करने के लिए आशावान होना।
(ख) मन में निराशा तो हमेशा बनी रहती है।
(ग) मनुष्य अपने प्रयत्न से असफलता को भी सफलता में बदल सकता है।
(घ) आदमी को अपने गौरव का ध्यान हमेशा रहता है।

**( आ ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो ( लगभग 50 शब्दों में ) :**

1. तन को उपयुक्त बनाए रखने के क्या उपाय है ?
2. कवि के अनुसार जग को निरा सपना क्यों नहीं समझना चाहिए ?
3. अमरत्व-विधान से कवि का क्या तात्पर्य है ?
4. अपने गौरव का किस प्रकार ध्यान रखना चाहिए ?
5. कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखो।

**( इ ) सप्रसंग व्याख्या करो ( लगभग 100 शब्दों में ) :**

1. सँभलो कि सु-योग न जाए चला,
   कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला ?
2. जब प्राप्त तुम्हें सब तत्व यहाँ,
   फिर जा सकता वह सत्व कहाँ ?

## भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **कविता के आधार पर इन शब्दों के तुकांत शब्द लिखो :**
   अर्थ, तन, चला, सपना, तत्व, यहाँ, ज्ञान, मान
2. **इन शब्दों में से उपसर्ग अलग करो :**
   व्यर्थ, उपयुक्त, सु-योग, सदुपाय, प्रशस्त, अवलम्बन, निराश
3. **इन शब्दों के विलोम शब्द लिखो :**
   निज, उपयुक्त, निराश, अपना, सुधा, ज्ञान, मान, जन्म
4. **इन शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो :**
   नर, जग, अर्थ, पथ , अखिलेश्वर
5. 'अमरत्व' शब्द में 'त्व' प्रत्यय लगा है। भाववाचक 'त्व' प्रत्यय खासकर भाववाचक संज्ञा का द्योतक है।
   'त्व' प्रत्ययवाले किन्हीं दस शब्द लिखो।

## योग्यता-विस्तार

1. व्यक्ति अपने किन कर्मों से अमर हो जाता है ?
2. मैथिलीशरण गुप्त की समान भाववाली कोई अन्य रचना याद करो और कक्षा में सुनाओ।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

| | | |
|---|---|---|
| **जग** | = | संसार |
| **उपयुक्त** | = | ठीक |
| **तन** | = | शरीर |
| **सदुपाय** | = | अच्छा उपाय |
| **निरा** | = | केवल |
| **पथ** | = | रास्ता |
| **प्रशस्त करना** | = | विस्तार करना |
| **अवलंबन** | | सहारा |
| **सत्त्व** | = | सार |
| **स्वत्त्व** | = | पहचान, अपने होने का भाव |
| **दव** | = | जंगल में स्वतः लगने वाली आग |
| **सुधा** | = | अमृत |
| **भव-कानन** | = | संसार रूपी जंगल |
| **मान** | = | यश, प्रसिद्धि |
| **मरणोत्तर** | | मृत्यु के बाद |